"चाहिए मोमिनों मौत फरक"

श्रीमति कंचन आहूजा, जयपुर

जो इस संसार में पैदा हुआ है उसका अंत निश्चय है। दुनियां में कई हुए और कई हो गए कई हो रहे हैं और कई होंगे, जो भी इस संसार में आया है, निश्चय एक दिन उसका नाश होगा या अन्त होगा आज कोई जा रहा है तो हम देख रहे हैं एक दिन हम जायेंगे तो दूसरे लोग देखेंगे और जब जहाँ जिसकी स्वांसों की गिनती समाप्त हो जाती है, उसी क्षण उसका अन्त हो जाता है। उपयुक्त सब कहने का तात्पर्य यह है कि इस नाश्वान दुनियाँ में जो चीज भी बनती है या पैदा होती है तो उसका अन्त निश्चय ही होता है। यह एक प्राकृतिक नियम है जिसके आगे कोई नहीं बचा यहाँ तक कि राम, कृष्ण, महमद ईसा और कई बड़े-बड़े ऋषि मुनि भी जिन्होंने इस दुनियां में तन धारण किया उन्हें भी एक दिन इसे छोड़ना पड़ा। फिर जीवों की तो क्या बात है। लाखों की उत्पत्ति होती है और समय आने पर उनका नाश भी होता है। इस मायावी संसार में रूहो ने भी आकर माया के ये झूठे तन धारण किए और दुनियाँ में अखण्ड नहीं हुए। और उन्हें भी इस बार झूठे तन को छोड़ना पड़ा जिसे दुनियाँ की भाषा में मरना या मौत कहते हैं। परन्तु रूह मोमिनों के मरने और दुनियाँ के मरने में बड़ा भारी फरक है। जैसा कि स्वामी जी ने वाणी में लिखा है।

दुनियाँ और मोमिनों के मरने में बड़ा फर्क नजर आता है। दुनियाँ मरती है। अपनी दुनियाँ के लिए उन्हें अपने घर, परिवार, बच्चों के आगे कुछ नजर नहीं आता वह अपना सारा समय व समर्थ इनके ऊपर ही समर्पित कर देते हैं। और समय आने पर अपने स्वांसों को भी इन्हीं के बीच समाप्त कर अपना अमूल्य जीवन नष्ट कर देते है और रूह मोमिन मरते हैं तो वो जीते हुए मरते हैं। उनके लिए शरीर या तन त्यागना कोई अहीमयत नहीं रखता। वह दुनियाँ में रहते तो दुनियाँ की तरह, और दुनियां वालों की तरह उनके भी घर परिवार व बच्चे होते हैं। लेकिन वह ये सब फर्ज निभाने की भाँति करते हैं। इनके लिए मिटते नहीं मरते नहीं और ये सब करते हुए अपना ध्यान हमेशा श्री राजी के चरणों में रखते हैं। क्योंकि उनका मूल ठिकाना ही श्री राजी के चरण ही है। वह इस दुनियाँ में जीते तो हैं लेकिन रहते मुर्दों की तरह ही है। वाणी में भी लिखा है।

पहले पी तु शरयत मौत का, कर तकलीफ मुकरर
एक जरा जिन सक रहे, पीछे जीवित रहे या मर

मरने के बाद तो हर कोई मुर्दा होता है या मरता है। लेकिन जीते जी इस दुनियाँ में मरना, रूह मोमिनों के सिवा कोई नहीं मर सकता दुनियाँ, दुनियाँ में रहती हुई इसको नहीं छोड़ सकती वह अपना अमूल्य जीवन इसके लिए नष्ट कर देती है लेकिन मोमिन जिनको राजी

Nijanand App

ने इस बात की पहचान करा दी है। कि ये अमूल्य जीवन बड़ी मुश्किलों से प्राप्त हुआ है। ये जीवन व्यर्थ में न बिताकर अपने धनी को अपने घर की पहचान करने के लिए मिला है। न जाने इस तन का साथ भी हमें कब तक मिलता है। और न जाने कब तक साथ छोड़ जायें और हम ये सोचते ही रह जाय कि अभी तो हमें और जीना है या हमारी उम्र ही क्या लेकिन इस कलयुग में हमारा यह भरम भी इस माया ने तोड़ दिया, पता नहीं ये स्वांस कब बन्द हो जाये जैसे कि लिखा भी है। "न जानों इन स्वांस को आवन होय न होय" इसलिए जो करना है वह आज या अभी ही क्यों न कर ले, और इस बात को मोमिन अच्छी तरह समझते हैं। इसलिए उनकी रहनी करनी भी उसी तरह की होती है व उनको एक स्वांस की कीमत का पता होता है। जैसा कि वाणी में लिखा है।

वैसे कोट राज बैकुण्ठ के न आवे इन क्षण के समान तात्पर्य ये कि करोड़ों बैकुण्ठ के राज मिले लेकिन कलयुग के एक क्षण प्राप्त होने की कीमत उन बैकुण्ठ के राज प्राप्त करने से कहीं ज्यादा अधिक है। क्योंकि इसी कलयुग में ही उस पूर्ण ब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति व पहचान होती है। लेकिन फिर भी हम इस स्वांस की कीमत न समझते हुए इसे दुनियाँ के लिए व्यतीत कर देते हैं। वैसे तो मनुष्य जन्म ८४ लाख योनियों के भुगतने के बाद प्राप्त होता है। और इस पर कलयुग में मनुष्य तन की प्राप्ति तो कई युगों को तपस्या करने के बाद प्राप्त होती है। और इस अमूल्य जीवन को व्यर्थ ही बरबाद कर देते हैं। जबकि अगले क्षण का भी हमें भरोसा नहीं है। जैसा कि वाणी में लिखा है।

नहीं भरोसा खिन को, बरस मास और दिन
ए वो दम पर बाँधया, भूली जात भजन

वास्तव में जिन रूह मोमिनों को हकीकत की पहचान है। वह ही इस क्षण, मास, बरस की कीमत समझते हैं। और अपना सर्वस्व धनी के चरणों में समर्पित करते हैं। उदाहरण हमारे सामने हमारे ही धाम के साथी है जैसे लाल दास, भीम भाई मुकन्द दास छत्रसाल, दयाराम, चंचल भाई इत्यादि है जिन्होंने जीते जी दुनियाँ को मृत किया व घर, गृहस्थी, परिवार की परवाह न करते हुए अपने आपको धनी के चरणों में समर्पित किया, पहचान वाले मोमिन ही जीते जी दुनिया में मर के दिखाते हैं। जैसा कि वाणी में भी लिखा है–

गर मरेंगे न मोमिन तो क्या मरेंगे मुनाफक

और ऐसा ही उन १२ मोमिनों ने करके दिखाया, उनमें एक दूसरे से आगे अपनी जान की परवाह न करते हुए कुर्बानी के लिए तत्पर थी और जैसा कि कहा भी जो कदी हमको मार जर ही तो हमको मरने का नहीं डर और ये हो फर्क था दुनियाँ के मरने में और मोमिन के मरने में, दुनियाँ मौत से डरती है। लेकिन मोमिन मौत से डरते नहीं बल्कि उसे अपने साथ लेकर चलते हैं। यह कुर्बानी की तत्परता या सुन्दर साथ के लिए मरने की उत्सुकता केवल उन मोमिनों में ही नहीं थी बल्कि अब भी ऐसे पहचान वाले सुन्दर साथ है जो सुन्दर साथ के लिए ही जीते है। और श्री राजो पर अपना सर्वस्व समर्पित करते हैं। जिन्हें अपना तन, अपना परिवार घर गृहस्थी कुछ भी दिखाई नहीं देता सिर्फ वह समर्पित होते हैं सुन्दर साथ के चरणों

Nijanand App

में और अपने आपको मिटा डालते हैं।

हम भी उन सुन्दर साथ की भाँति ही राजी के अंग है। तो क्यों हम अपने स्वांसों को खोरते हैं जैसे कि वाणी में भी लिखा है।

स्वांस स्वांस निज नाम जपों, वृथा स्वांस मत खोय
न जानो इन श्वांस को, आवन होय न होय

इस तरह हमें अपने श्वासों को खोना नहीं है। बल्कि उससे हमें आगे की कमाई करनी है। कीरंतन में भी देह की तरफ के जवाब से ये ही बात स्पष्ट है कि देह कहती है कि मैं तो मिट्टी हूं मिट्टी में मिल जाऊंगी इसलिए इस देह के रहते हुए इससे क्यों न वह अखण्ड सुख की प्राप्ति कर लें अन्यथा इसका अन्त तो बाकी दुनियाँ वालों की तरह होना ही है। इसीलिए जितने समय के लिए हमें ये तन मिला है क्यों न इसे धनी के चरणों के ऊपर मिटा दें या समर्पित कर दें ताकि इस तन के छोड़ने के बाद दुनियाँ वाले भी वाह-वाह करें व आगे धनी भी शाबाशी दें जैसा कि वाणी में भी लिखा है।

इत भी हुइया धन-धन, धाम धनी भी कहे धन-धन

हम इस दुनियाँ को देखने के लिए अवश्य आए हैं लेकिन इसमें मरने के लिए नहीं आए हमें मरना है तो धनी के चरणों पर और अपने आपको जीते जी भी मारना है जो कोई भी नहीं मर सकता अर्थात हमें अपनी मैं खुदी को समाप्त कर धनी की मैं को अपने दिल में बसाना है और ऐसे सुन्दर साथ ही मर कर भी कभी नहीं मरते है। जैसा कि स्वामी जी ने भी फरमाया है।

जो पहले आप मुरदे हुए, दुनी करी मुरदार
हक तरफ जोबते हुए, उड़ पहुंचे नूर के पार

जब हमें एक न एक दिन अवश्य मरना ही है। तो हम दुनियाँ की मौत न मरकर मोमिन की मौत क्यों न मरें, वैसे भी यदि हम यहाँ मर भी गए तो क्या फर्क पड़ता है। धनी के चरणों में तो हमारा तन अखण्ड है ही जिनका कभी अन्त व नाश नहीं होता है। इसलिए हमारी जो सुरता इस खेल को देखने आई है उसे हमने परमधाम में अपने तन में उठाना है ताकि हम दुनियाँ को मुरदार कर सकें, और अपने आपको धनी के चरणों में समर्पित करें।

(शेष पृष्ठ २४ का)

"खेल में हमारा हाल"

जो कुछ भी हम कर रहे हैं राज श्याम जी देख रहे हैं—वह १२००० रूहों के सिर पर खड़े है—कौन क्या कर रहा है--सब निहार रहे हैं--हम झूठ बोलें--कोई पाप—कोई गुनाह करें--चोरी करें--कोई भी गलत काम करे--किसी की बुराई करें--किसी पर हंसे—किसी का मजाक उड़ाएं--किसी का दिल दुखाएं--जो कुछ भी कर रहे हैं--वह देख रहे हैं--

खुदा देखता है सबन, और जानता है सबन के मन

अन्त में मैं यही कहूंगी—छोटी-छोटा बातों को दिलों से भूला देना चाहिए--आपस में सबसे प्यार करना चाहिए--बाइबिल में भी लिखा है--जो मेरे बन्दों से प्यार करेगा—खुदा उसको प्यार करेगा--आपस में झगड़ा-ईर्ष्या—मैं अहंकार—गिला—शिकवा नाराजगी सुन्दरसाथ में विरोध देख कर राजश्यामा जी का दिल कितना दुखता होगा—यह वाणी से ही पता चलता है--

ज्यों-ज्यों साथ में होत है प्रीत, त्यों-त्यों मोही को होत है सुख।
ज्यों-ज्यों बोध करत हैं साथ में, अन्त वाही को है जो दुख॥

अगर आप सब अपने पिया को खुश देखना चाहते हो तो बस अपने दिल में सब साथ के लिए प्यार भर लो।

Nijanand App